जून २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

प्रेजुडिस

अनुक्रमणिका

प्रेजुडिस

दादाजी कहते हैं... ३

यह तो नई ही बात! ४

फायदे की तरकीब ६

ऑटोग्राफ ९

अपने आपको परखकर देखो १३

चलो खेलें १४

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १६

मीठी यादें १८

संपादकीय

बालमित्रों,

प्रेजुडिस अंग्रेजी भाषा का शब्द है। इसका सही हिंदी अर्थ पूर्वाग्रह होता है। पूर्वाग्रह अर्थात किसी व्यक्ति के प्रति एक उल्टी सोच बना लेना और हर बार उसे उसी दृष्टि से देखना। उदाहरण के तौर पर जैसे हमारे दोस्त ने एक दिन हमारे साथ अपना लंच बॉक्स शेयर नहीं किया तो हम उसके लिए प्रेजुडिस हो जाते हैं कि वो तो अपना लंच बॉक्स किसी के साथ कभी भी शेयर नहीं करता। एक-दो बार किसी ने कुछ किया तो हमेशा वह ऐसा ही करेगा, ऐसा हम कैसे तय कर सकते हैं? लेकिन ऐसा हो जाता है और यही प्रेजुडिस कहलाता है।

किसी के लिए प्रेजुडिस क्यों नहीं रहना चाहिए? और यदि प्रेजुडिस हो ही गए हैं तो उससे बाहर कैसे निकलें? इस विषय पर पूज्य दादाश्री ने ऐसे प्रेजुडिस से बाहर निकलने के उपाय बहुत ही सुंदर शब्दों में बताए हैं जो इस अंक में प्रस्तुत हुए हैं।

तो आइए, हम उन चाबियों को पाकर अपने-अपने प्रेजुडिस से बाहर आएँ और भार से मुक्त हो जाएँ।

- डिम्पल महेता

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : ३ अंक : ३
अखंड क्रमांक : २७
जून २०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

अक्रम एक्सप्रेस

दादाजी कहते हैं...

प्रेजुडिस यानी यदि कोई व्यक्ति हमें रोज़ परेशान करता हो और आज वह हमें खाने पर बुलाने आया हो तो उसे देखते ही हमें यही विचार आएगा कि वो आज भी हमें परेशान करने ही आया है। यह प्रेजुडिस है।

एक भाई हमेशा से दान देते हों और आज भी वे दान ही देंगे, ऐसा मानना वह "प्रेजुडिस" है।

प्रेजुडिस यानी मन में याद ही रहता है कि कल इसने ऐसा किया था, ऐसे डाँटा था, यह ऐसा ही है। अभिप्राय वह एक प्रकार का पूर्वाग्रह है, उसे ही प्रेजुडिस कहते हैं। हमें पहले के "जजमेन्ट" को छोड़ देना चाहिए, वे तो बदलते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रेजुडिस नहीं रखना अर्थात क्या? कृपया उदाहरण देकर समझाइए, दादा।

दादाश्री : एक इंसान कल जेब से सवा सौ रुपये निकालकर ले गया। घर के सभी लोगों ने उसे ऐसा करते हुए देखा हो और फिर वह अगले दिन जब आएगा तो सभी लोग यही कहेंगे न कि वह चोर है?

प्रश्नकर्ता : जी, हाँ।

दादाश्री : उसे चोर कैसे कह सकते हो? किस तरह से ऐसा मान लिया कि आज भी वह चोरी ही करेगा! आपको सावधान रहना चाहिए। यदि कोट इत्यादि बाहर रखे हों तो उसके आने पर अंदर रख देने चाहिए, लेकिन प्रेजुडिस नहीं होने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मतलब, उन अभिप्रायों को ही बदल देना चाहिए?

दादाश्री : हाँ। संयोगवश बने चोर को चोर नहीं कहा जाता। संयोगवश तो राजा भी चोरी करता है। पूरी जाँच किए बिना अभिप्राय नहीं रखना चाहिए। पूरी जाँच करने की शक्ति किसमें होती है? ज्ञानीपुरुष के अलावा किसी में भी नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा हो जाता है कि हमें सामनेवाले का व्यू पोइन्ट गलत ही लगता है, इसलिए हमारी वाणी भी कड़वी ही निकलती है।

दादाश्री : वह गलत दिखता रहता है इसीलिए गलत हो जाता है न! वह पूर्वाग्रह ही बाधा डालता है न? "खराब है, खराब है," ऐसा पूर्वाग्रह हो गया, इसलिए खराब वाणी निकलती है न!

प्रश्नकर्ता : यदि कोई पूर्वाग्रह या अभिप्राय बहुत ही गहरा हो तो उसका बार-बार प्रतिक्रमण करने से धुल जाएगा?

दादाश्री : हाँ, धुल जाएगा। प्रतिक्रमण करते रहेंगे तो सब धुल जाएगा।

हमें एक पल के लिए भी किसी के लिए पूर्वाग्रह नहीं होता। यदि कल आप हमारे साथ झगड़ा करके गए हों और दूसरे दिन आओ, तो हम ने कल की बात साइड में रख दी होती है। यदि पूर्वाग्रह रखूँ तो वह मेरी भूल है, फिर भले ही आप दूसरे दिन वैसे ही करो। उसमें कोई हर्ज नहीं।

यदि इंसान पूर्वाग्रह रहित हो जाए तो उसका कल्याण हो जाए।

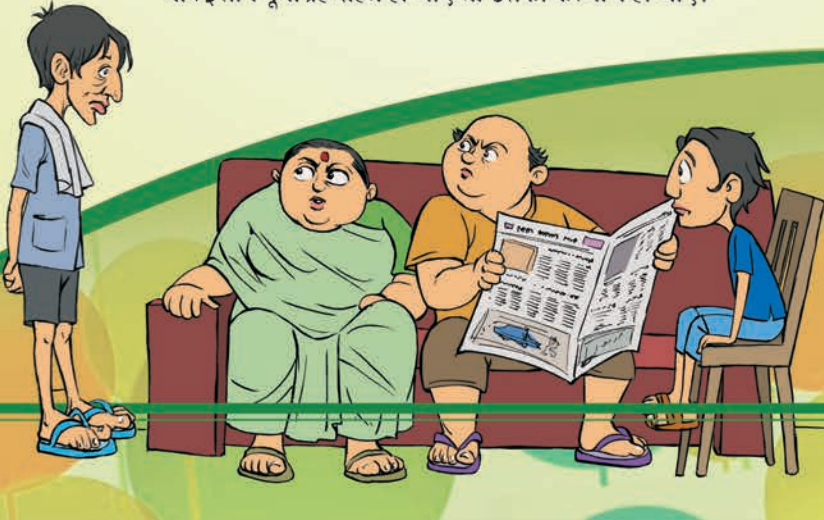

यह तो

खराब प्रकृति का संग नहीं करना और यदि करो तो पूर्वाग्रह नहीं रखना।

इंसान यदि पूर्वाग्रह रहित हो जाए तो परमात्मा बन सकता है!

डाँटना कब काम का है, जब पूर्वाग्रह रहित डाँटे तब। डाँटने से सामनेवाला व्यक्ति सही नहीं बोल पाता और गलत (कपट) कर बैठता है। बिना पूर्वाग्रह के कहा जाए तो फायदा होगा। लेकिन बिना पूर्वाग्रह के कौन कह सकता है, तब कहे सिर्फ ज्ञानीपुरुष। पूर्वाग्रह यानी कल डाँट पड़ी हो और वह मन में याद रहे कि ऐसा ही है, ऐसा ही है और फिर बार-बार डाँट पड़ने से उसमें ज़हर फैलता है। भगवान ने इसे भयंकर रोग कहा है। मूर्ख बनने की निशानी।

पूज्य स्वीकार करने के बाद वह चाहे कितना भी खराब करे, लेकिन तुम्हें अपनी दृष्टि नहीं बिगाड़नी चाहिए। अभिप्राय तो क्या लेकिन सामनेवाले के प्रति दृष्टि भी नहीं बदलनी चाहिए।

नई ही बात है!

यदि कल किसी ने हमें मारा हो और आज उसे देखें तो वह नया ही लगना चाहिए। और वह नया ही होता है लेकिन हमें वैसा नहीं दिखता, वह हमारी गलती है। एक कर्म पूरा हो जाने के बाद वह दूसरे कर्म में ही होता है।

यदि सामनेवाले के प्रति प्रेजुडिस छोड़ देंगे तो वह तुम्हारे कहे अनुसार करेगा, ऐसा है।

सामने चोरी होते हुए देखें फिर भी जिसे चोर के प्रति किंचित्‌मात्र भी प्रेजुडिसवाली दृष्टि नहीं है वह है ज्ञानी। कल तक जो चोर था वह आज साहूकार नहीं बनेगा उसका क्या प्रमाण है!

सामनेवाला "ढीठ" है, ऐसा अभिप्राय हो तो वह "नोबल" है ऐसा अभिप्राय बनाना चाहिए!

फायदे की तरकीब

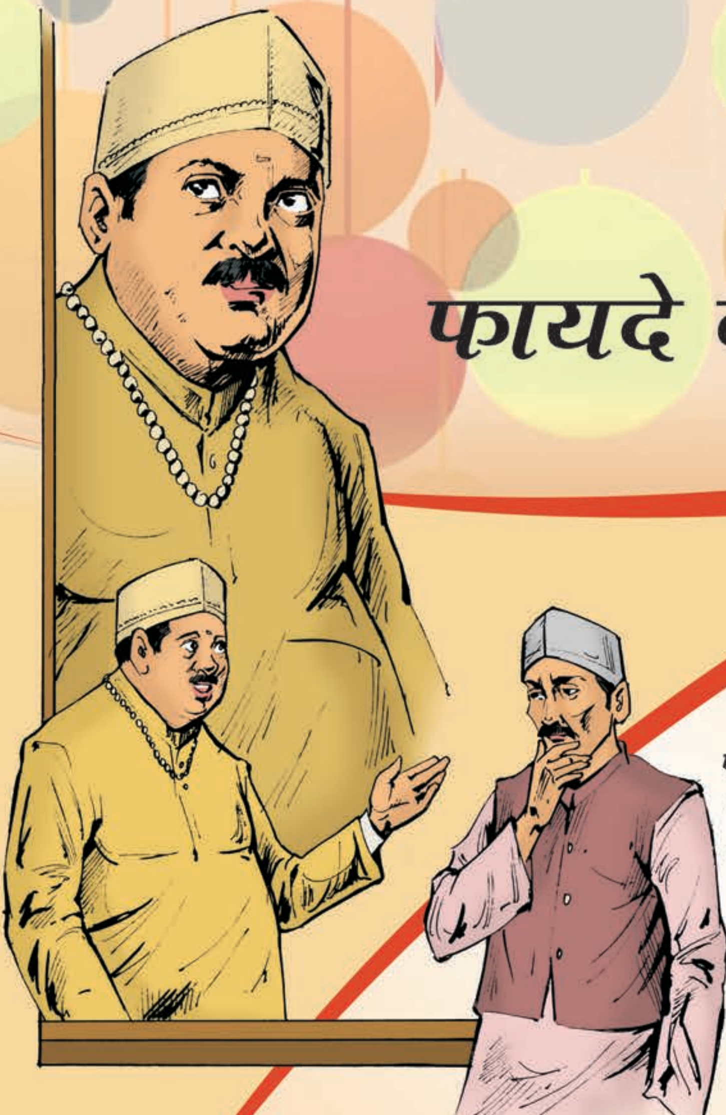

चंपानगरी में लक्ष्मीचंद नामक एक धनवान व्यापारी रहता था। अपार धन होते हुए भी अधिक धन कैसे बढ़े उसी उलझन में रहता था।

"दयानंद, यदि तुम मुझे मेरे व्यापार के लिए ऐसी कोई तरकीब ढूँढकर दो कि जिससे मुझे हमेशा फायदा ही हो, तो मैं तुम्हारी पगार दुगनी कर दूँगा।" लक्ष्मीचंद ने अपने बुद्धिमान मुनीम दयानंद को प्रलोभन देते हुए कहा।

दयानंद तो कई दिनों तक बंद कमरे में बैठकर ऐसी तरकीब ढूँढने लग गए। आखिर में एक रात दयानंद को तरकीब मिल ही गई।

"मुझे तरकीब मिल गई, मेरी गिनती सही है!" उल्लासपूर्वक दयानंद ने लक्ष्मीचंद से कहा।

लक्ष्मीचंद दूसरे दिन एक लंबी यात्रा पर जानेवाले थे। समय की कमी होने की वजह से, दयानंद की बात को विस्तार से सुने बिना ही, लक्ष्मीचंद ने दयानंद से कहा, "शाबाश! देखो, मैं तीन महिनों के लिए बाहरगाँव जा रहा हूँ। इस दौरान यदि आप मुझे मुनाफा करके दोगे, तो जैसा मैंने कहा वैसे तुम्हारी पगार दुगनी करके दूँगा।"

लक्ष्मीचंद जब प्रवास से वापस लौटे, तब उन्होंने देखा कि उनकी तिजोरी आधी खाली हो गई थी। यह देखकर उन्हें धक्का लगा।

"ज़रूर यह काम दयानंद का ही है। उसने ही मेरा सारा धन चुरा लिया है। एक नंबर का लुटेरा और बदमाश निकला। पिछले साल भी उसने हिसाब में घोटाला किया था। भूल समझकर मैंने उसे जाने दिया था, लेकिन इस बार उसे ऐसी सज़ा दूँगा कि ज़िंदगीभर याद रखेगा।" पूर्वाग्रह की आग में लक्ष्मीचंद आग बबूला हो रहे थे।

दयानंद के घर जाकर उन्होंने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया।

"अरे सेठ जी आप? आइए, आइए! हमारा सौभाग्य कि आप हमारे घर पधारे" दयानंद

की पत्नी ने सेठ जी का स्वागत करते हुए कहा।

दयानंद की पत्नी का विनय देखकर, लक्ष्मीचंद मन ही मन सोचने लगे कि "दयानंद का पूरा परिवार ही ढोंगी हैं।"

उन्होंने कड़े शब्दों में कहा, "नहीं मेरे पास अंदर आने का समय नहीं है, दयानंद कहाँ है?"

"वे बाहर गए हैं। लेकिन आप कुछ लिए बिना जाएँगे यह अच्छा नहीं लगेगा। थोड़ी देर बैठिए। मैं अभी आई।" लक्ष्मीचंद को बिठाकर दयानंद की पत्नी रसोईघर में गई।

लक्ष्मीचंद ज़बरदस्ती बैठे। वे कमरे को चारों ओर से देखने लगे। कमरे में रखी हुई सभी कीमती चीज़ें उन्हें दिखने लगीं।

"इस दयानंद को इतना वैभव कैसे पुसाता है? ज़रूर मेरे से लूटे हुए धन से ये सभी चीज़ें खरीदी होंगी।" लक्ष्मीचंद विचारों में खोए हुए थे, तभी दयानंद की पत्नी गरमागरम केसरवाला दूध एक चाँदी के कप में लेकर आई।

यह देखकर, लक्ष्मीचंद के भीतर जल रही पूर्वाग्रह की आग में जैसे घी गिरा और वह आग और भड़क उठी।

फटाफट दूध पीया और दयानंद आए तो तुरंत ही उनके पास भेजने का आदेश देकर, वे चले गए।

थोड़ी ही दूर गए थे कि दयानंद उन्हें सामने मिल गए।

"नालायक, तूने मेरे साथ धोखा किया? एक बार तुझे माफ किया था उसका तूने गलत फायदा उठाया?" सेठ ने दयानंद का गला पकड़ लिया।

सेठ के ऐसे बर्ताव से दयानंद स्तंभित हो गया, और बोला "सेठ... ये क्या कह रहे हैं आप? मैंने कभी आपको धोखा नहीं दिया है, उस दिन मेरी गिनती में गलती हुई थी, जो मैंने आपके सामने कबूल कर ली थीं। लेकिन इस बार तो ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है।"

लेकिन सेठ ने तो दयानंद की कोई भी सफाई सुने बिना ही उसे नौकरी से निकाल दिया।

दिन बीतने लगे। धीरे-धीरे सेठ का व्यापार बढ़ने लगा। गाँव के लोग सेठ को बहुत मान-सम्मान देने लगे। ऐसा सम्मान तो सेठ को अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं मिला था।

एक दिन सेठ अपनी धुन में जा रहे थे। अचानक, उन्हें ठोकर लगी और वे रास्ते में गिर गए। पैर से खून की धारा बहने लगी। लक्ष्मीचंद सेठ की ऐसी हालत देखकर, चार-पाँच लोगों ने मिलकर उन्हें उठाया और नज़दीक ही किसी घर में उन्हें ले गए। मरहम-पट्टी करके, सेठ को पानी पिलाया।

सेठ ने सभी का आभार माना। जवाब में एक व्यक्ति बोला, "अरे सेठ, आपका आभार हम जितना माने उतना कम हैं। ज़रूरत के समय आपने हमारी जो मदद की है, उसका बदला तो हम कभी नहीं चुका सकेंगे।"

यह सुनकर, सेठ को बहुत आश्चर्य हुआ। ज़िंदगी में कभी किसी की मदद नहीं करनेवाले सेठ को पहली बार ऐसा सुनने को मिला। सुनकर अच्छा लगा। लेकिन फिर भी वे कुछ समझ नहीं पाए।

"मैंने तुम्हारी मदद की थी? लेकिन तुम तो मेरे व्यापार के ग्राहक हो न?" सेठ ने आश्चर्य से पूछा।

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "हाँ सेठ, आपके मुनीम ने आपके कहने पर गाँव में हमारे जैसे बहुत से लोगों की खुले दिल से मदद की और उसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं, और तभी से हमने निश्चय किया था कि आपके साथ ही व्यापार करेंगे और हमारे दोस्तों को भी आपके साथ व्यापार करने के लिए तैयार

किया था।"

यह सुनकर सेठ को तिजोरी खाली होने का कारण समझ में आ गया। और उसके बाद व्यापार में तेज़ी से हुई प्रगति का कारण भी समझ में आ गया।

बिना देर किए सेठ, दयानंद के घर पहुँच गए। दयानंद आँगन में बैठकर अखबार पढ़ रहे थे। सेठ को अपने घर आया देखकर वे तुरंत खड़े हो गए, और बोले "आओ, आओ सेठ पधारो।"

दयानंद ने सेठ को प्रेम से बिठाया और अपनी पत्नी से चाय मंगवाई। कुछ दिन पहले ही सेठ ने दयानंद का बहुत अपमान किया था, लेकिन दयानंद के मन में सेठ के प्रति बिल्कुल भी पूर्वाग्रह नहीं था, "आज फिर से अपमान करेंगे, ऐसा भय भी नहीं था।"

"दयानंद, मुझे विस्तार से बताओ कि जब मैं प्रवास पर गया था तब क्या हुआ था?" सेठ ने दयानंद से पूछा। विस्तार से सभी बातें बताते हुए दयानंद ने कहा, "सेठ जी, आपने मुझसे व्यापार में किस तरह फायदा मिले उसकी तरकीब ढूँढने के लिए कहा था। हर तरह से सोचकर मुझे समझ में आया कि व्यापार में लाभ की एक सीमा होती है, लेकिन दूसरों की मदद करने का व्यापार करेंगे, तो उसमें लाभ ही लाभ होगा। और इसीलिए मैंने आपके पैसे लोगों की मदद करने में खर्च किए।"

सेठ को इस बात का बहुत पश्चाताप हुआ कि "पूर्वाग्रह की वजह से मैंने कितनी बड़ी भूल कर दी।" उन्होंने दयानंद से दिल से माफी माँगी, और फिर से नौकरी पर वापस आने की विनती की।

और तभी से लक्ष्मीचंद ने किसी के प्रति कभी भी पूर्वाग्रह नहीं रखने का दृढ़ निश्चय किया।

ऑटोग्राफ

वेकेशन के बाद आज स्कूल का पहला दिन था। सभी के चेहरों पर वेकेशन में की हुई मौज-मस्ती की ताज़गी दिख रही थी।
"बच्चों, आज क्लास में हम सभी गप-शप करेंगे"। वेकेशन में आप सब ने क्या-क्या किया, वह सभी के साथ शेयर करेंगे। सब से पहले कौन बताएगा?
सर का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही अपूर्व ने हाथ ऊपर कर दिया।
बताओ अपूर्व, वेकेशन में तुमने क्या किया?
वेकेशन में मैं फैमिली के साथ क्रिकेट मैच देखने गया था। और वहाँ मैंने सचिन तेंदुलकर का ऑटोग्राफ लिया था।
पूरी क्लास में फुसफुसाहट शुरू हो गई।
वाह, क्या बात है!
पहले मुझे।
प्लीज़, मुझे दिखा न अपूर्व।

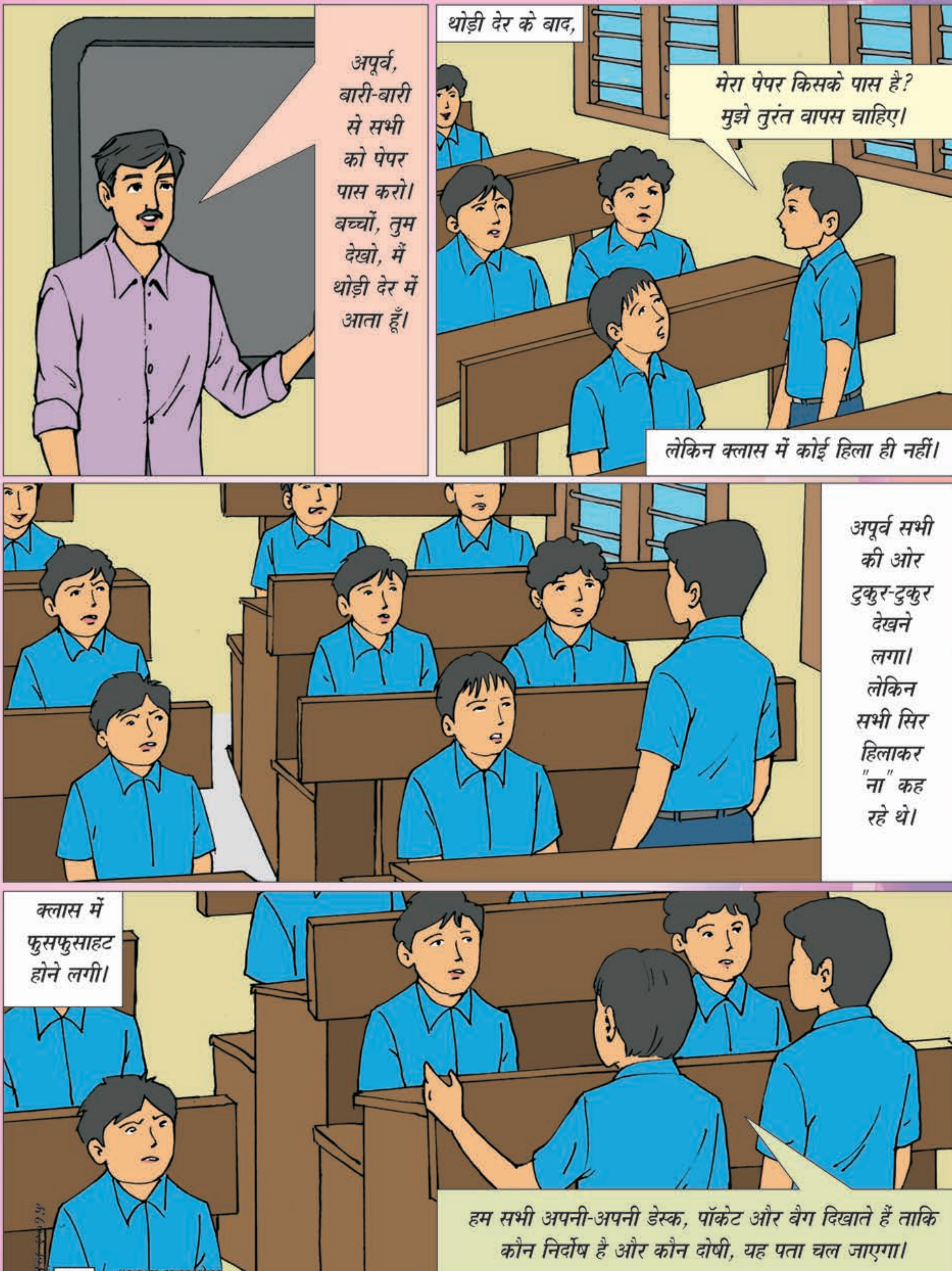
अपूर्व, बारी-बारी से सभी को पेपर पास करो। बच्चों, तुम देखो, मैं थोड़ी देर में आता हूँ।
थोड़ी देर के बाद,
मेरा पेपर किसके पास है? मुझे तुरंत वापस चाहिए।
लेकिन क्लास में कोई हिला ही नहीं।
अपूर्व सभी की ओर टुकुर-टुकुर देखने लगा। लेकिन सभी सिर हिलाकर "ना" कह रहे थे।
क्लास में फुसफुसाहट होने लगी।
हम सभी अपनी-अपनी डेस्क, पॉकेट और बैग दिखाते हैं ताकि कौन निर्दोष है और कौन दोषी, यह पता चल जाएगा।

बारी-बारी से सभी ने अपनी डेस्क, बैग और पॉकेट दिखाए। आरव की बारी आई। आरव अपना बैग नहीं खोलने के बहाने बनाने लगा।
आरव, यदि तुम्हारे पास अपूर्व का पेपर नहीं है तो तुम्हें अपनी बैग दिखाने में क्या हर्ज है?
लेकिन, मैंने कहा न कि "मैंने नहीं लिया है।"
आरव गुस्से से एकदम लाल हो गया। नवन और प्रणय ज़बरदस्ती आरव का बैग खोलने लगे।
आरव ने ही लिया है। एक नंबर का चोर है। लास्ट इग्ज़ाम में भी वह चोरी करते हुए पकड़ा गया था।
तभी अपूर्व ने आवाज़ लगाई।
स्टॉप! प्लीज़ सभी शांत हो जाओ।
मेरे दादाजी ने सिखाया है कि चाहे कैसे भी संयोग हों, किसी के प्रति प्रेजुडिस नहीं होने चाहिए। एक बार वह इग्ज़ाम में चीटिंग करते हुए पकड़ा गया, तो उसे हमेशा के लिए चोर नहीं मान लेना चाहिए।
उतने में तो अध्यापक हाथ में एक पेपर लेकर क्लास में दाखिल हुए।
यह क्या? मुझे लगा कि आपके लिए यह ऑटोग्राफ बहुत कीमती है लेकिन यह पेपर तो लॉबी में पड़ा हुआ था।

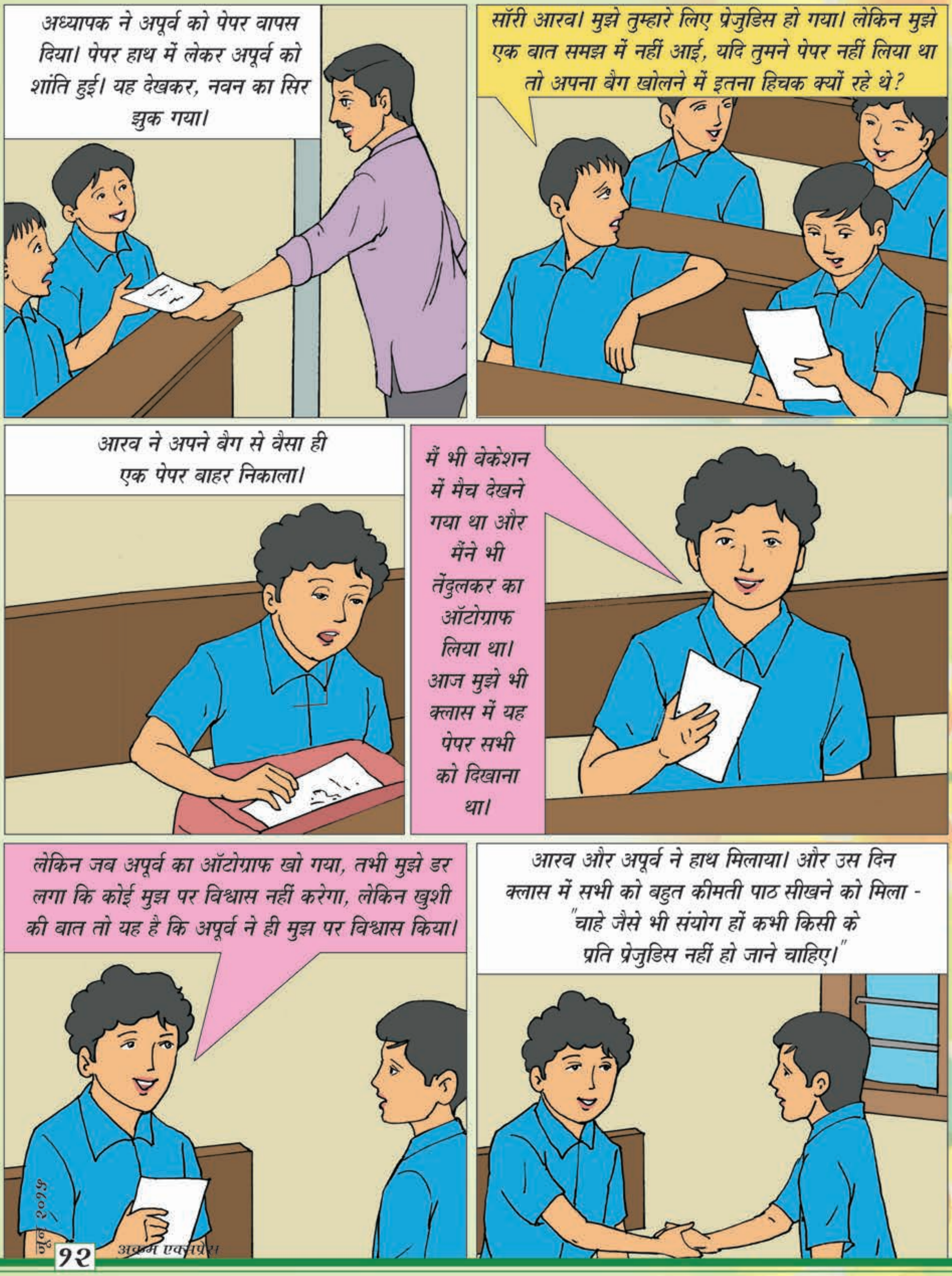
अध्यापक ने अपूर्व को पेपर वापस दिया। पेपर हाथ में लेकर अपूर्व को शांति हुई। यह देखकर, नवन का सिर झुक गया।
सॉरी आरव। मुझे तुम्हारे लिए प्रेजुडिस हो गया। लेकिन मुझे एक बात समझ में नहीं आई, यदि तुमने पेपर नहीं लिया था तो अपना बैग खोलने में इतना हिचक क्यों रहे थे?
आरव ने अपने बैग से वैसा ही एक पेपर बाहर निकाला।
मैं भी वेकेशन में मैच देखने गया था और मैंने भी तेंदुलकर का ऑटोग्राफ लिया था। आज मुझे भी क्लास में यह पेपर सभी को दिखाना था।
लेकिन जब अपूर्व का ऑटोग्राफ खो गया, तभी मुझे डर लगा कि कोई मुझ पर विश्वास नहीं करेगा, लेकिन खुशी की बात तो यह है कि अपूर्व ने ही मुझ पर विश्वास किया।
आरव और अपूर्व ने हाथ मिलाया। और उस दिन क्लास में सभी को बहुत कीमती पाठ सीखने को मिला - "चाहे जैसे भी संयोग हों कभी किसी के प्रति प्रेजुडिस नहीं हो जाने चाहिए।"

अपने आपको परखकर देखो

नीचे दिए गए प्रसंग में किसे-किसे प्रेजुडिस (पूर्वाग्रह) का भूत चिपका है उसे ढूँढ निकालते हैं और दादा की समझ के खजाने से उस भूत को भगा देते हैं।

शनिवार की दोपहर थी। सौरीन के घर पर उसके कज़ीन श्लोक, आलाप भाई, पूर्वी और दिपा इकट्ठे हुए थे। सभी ने स्कूल फेर में जाने का प्लान बनाया। प्लान सुनकर दिपा को कुछ उलझन हुई। उसने आलाप भाई को एक तरफ बुलाकर कहा, "हम पूर्वी को नहीं ले जाएँगे, वह बहुत ज़िद करेगी और हम सभी का मुड़ खराब कर देगी।"

"दिपा, उसने एक बार ज़िद की थी, तो वह हमेशा ज़िद करेगी ऐसा कैसे मान सकते हैं?" ऐसा कहकर आलाप भाई ने दिपा को समझाया।

मम्मी ने फेर में जाने की इजाज़त दे दी, लेकिन सभी को संभालने की और पैसों की ज़िम्मेदारी आलाप भाई को सौंप दी।

सौरीन ने सोचा, "पिछली बार तो आलाप भाई ने पैसे खो दिए थे। इस बार भी खो ही देंगे।" फेर में पहुँचते ही श्लोक की नज़र अपने क्लासमेट रोनक पर पड़ी। श्लोक ने तुरंत ही नज़रे घुमा ली। "यह यहाँ कहाँ से? मुझे उससे नहीं मिलना है। अगर मिलूँगा तो वह मेरा दिमाग़ खा जाएगा।"

फेर में आलाप भाई को उनके फ्रेन्ड्स मिल गए और वे लोग भी साथ हो लिए। सभी ने बहुत मज़े किए। आइस्क्रिम खाकर जुदा होने का सभी ने नक्की किया। पैसे निकालने के लिए आलाप भाई ने जेब में हाथ डाला तो उनका बोलेट नहीं था। उसी क्षण आलाप भाई की नज़र मिलाप के वोलेट पर पड़ी।

यह देखकर उन्होंने सोचा, "अरे, यह तो मेरा वोलेट है। बचपन से ही मिलाप चोर है।"

लेकिन फिर आलाप भाई ने दूसरी जेब में हाथ डाला तो अपनी ही जेब से उन्हें अपना वोलेट मिल गया।

नीचे दिए गए टेबल में आपकी समझ लिखो -

प्रेजुडिस का भूत किसे चिपका है?	ऐसी परिस्थिति में आप दादा की कौन सी समझ का उपयोग करेंगे?
दिपा	
सौरिन	
आलापभाई	
श्लोक	

चलो खेलें

१. अंकीय-पहेली खेलो

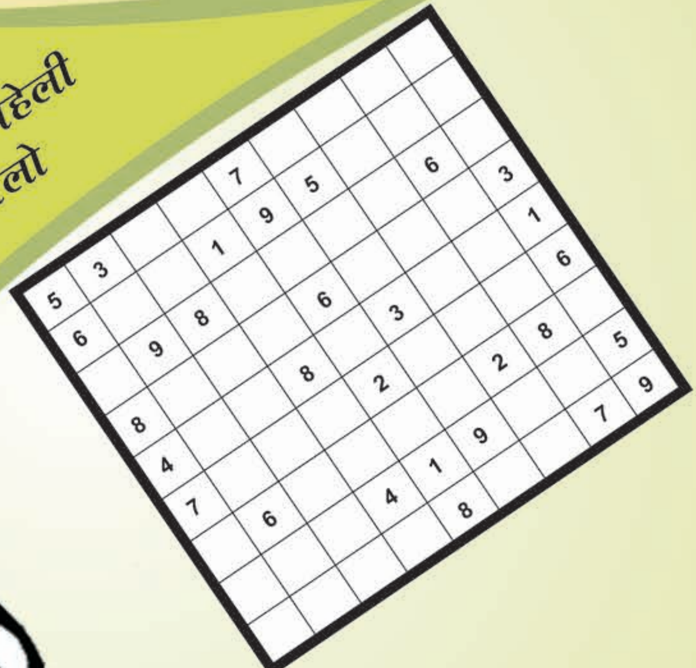

२. इस चित्र में क्या लिखा हुआ है? उसे ढूँढ निकालो।

३. बिंदुओं को जोड़कर चित्र बानाओ।

४. नीचे दिए गए चित्रों में १० फर्क ढूढों

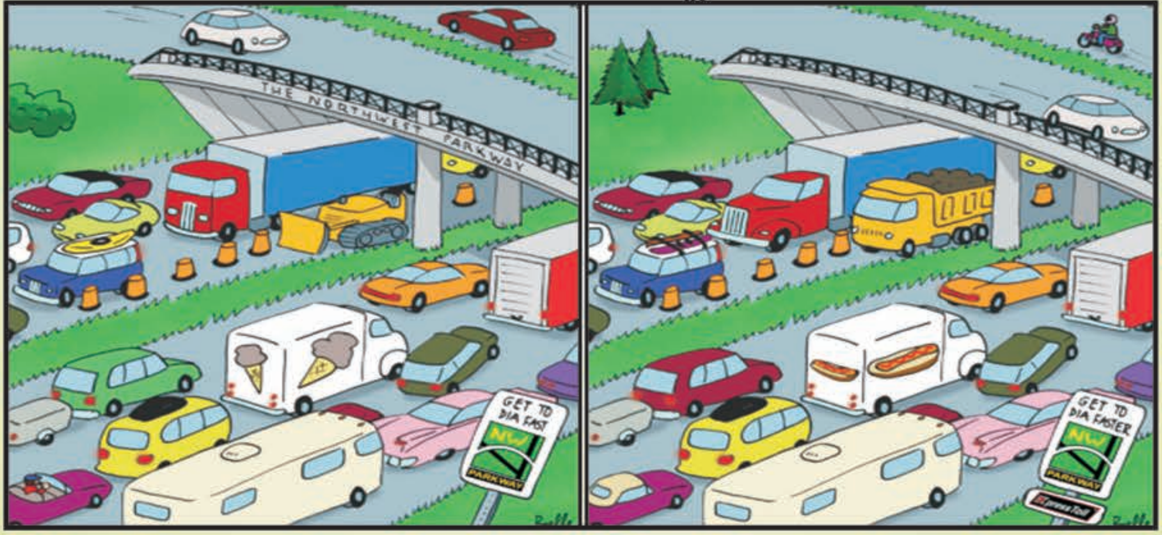

T	R	R	L	V	F	O	U	R	V
E	B	O	M	S	E	V	E	N	R
N	S	P	N	Q	A	H	X	T	C
B	Z	L	I	O	N	E	K	B	B
T	H	R	E	E	E	I	G	H	T
V	O	T	W	O	V	Z	R	N	Q
F	E	H	L	H	S	I	X	F	X
T	E	N	I	N	E	G	D	O	I
D	P	N	A	C	E	R	T	B	B
X	I	Q	F	I	V	E	I	S	I

५. पास में दिए गए कोष्टक में से १ से १० के शब्द ढूँढ निकालो।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

प्रभु महावीर की पुत्री प्रियदर्शना और दामाद जमाली, दोनों ने प्रभु से दीक्षा अंगीकार की थी। साध्वी प्रियदर्शना साध्वीवृंद के साथ गई और मुनि जमाली प्रभु के साथ विहार करने लगे।

एक दिन मुनि जमाली ने प्रभु से अलग विहार करने की आज्ञा माँगी। प्रभु को उसमें कोई लाभ नहीं दिखा इसलिए वे मौन रहे। प्रभु की ओर से कोई जवाब नहीं मिलने पर मुनि जमाली ने इसे अनुमति समझ ली और ५०० साधुओं के साथ, प्रभु से अलग हो गए तथा विहार करते हुए श्रावस्ती नगरी में आ गए।

वहाँ उन्हें बुखार आया। उन्हें बहुत कमज़ोरी आ गई थी। उन्होंने साधुओं को बुलाकर कहा, "मुझे आराम करना है। जल्दी मेरे लिए बिछौना (संथारो) तैयार करो।"

साधुओं ने बिछौना तैयार करना शुरू किया। बुखार की वजह से चैन नहीं पड़ने पर उन्होंने साधुओं से पूछा, "बिछौना तैयार हो गया या नही?"

बिछौना आधा तैयार हो गया था, इसलिए साधुओं ने "बिछौना तैयार हो गया है" ऐसा कह दिया। वेदना से परेशान मुनि जमाली जवाब सुनकर तुरंत सोने आए तो देखा कि साधु अभी बिछौना तैयार कर रहे थे।

वे आवेश में आ गए और बोले, "जब बिछौना तैयार ही नहीं है, तो तुम ऐसा किस तरह कह सकते हो कि बिछौना तैयार है।"

"प्रभु महावीर ने कहा है कि जो काम चल रहा हो वह हो गया ही कहलाता है।" एक साधु ने जवाब दिया।

"नहीं, जो कार्य पूरा हो गया हो वही "हो गया" कहलाता है और जो कार्य अभी हो

रहा है उसे "हो गया" ऐसा नहीं कह सकते।" मुनि जमाली ने उग्रता से कहा।

साधु ने विवाद किया लेकिन मुनिवर जमाली उनकी एक भी बात मानने को तैयार नहीं थे। अंत में उनके साथ आएँ हुए ५०० साधु उन्हें छोड़कर प्रभु वीर के पास चले गए।

एक बार मुनि जमाली चंपानगरी में आए, जहाँ प्रभु महावीर का समवसरण रचा गया था। उन्होंने समवसरण में आकर प्रभु के समक्ष कहा:

"हे जिन! मुझे केवलज्ञान होने की वजह से मैं सर्वज्ञ बन गया हूँ।"

उनके इस कथन के सामने प्रभु तो कुछ नहीं बोले लेकिन गौतम स्वामी तुरंत बोल पड़े, "हे जमाली! ऐसा असत्य वचन बोलने की आपको ज़रूरत ही नहीं है। यदि तुम केवलज्ञ बन गए हो तो मेरे प्रश्न का जवाब दो। यह लोक शाश्वत है या अशाश्वत और इस जगत् के सभी जीव नित्य हैं या अनित्य?"

जमाली, गौतम स्वामी के इस प्रश्न का जवाब नहीं दे पाए। फिर भी उन्होंने अपने सर्वज्ञ होने की बात को पकड़कर ही रखा।

मृत्यु आने तक उन्होंने साधुओं के प्रति क्रोध और केवलज्ञानी होने के गलत बयान देते रहने जैसे पाप कर्म की आलोचना-प्रतिक्रमण किए बिना ही जीवन पूरा किया, जिससे वे देवलोक में निचले दर्जे के देव हुए।

मीठी यादें

एक बार दादा दर्शन में संयोगवश एक नई ब्रह्मचारी बहन को रसोईघर की ड्यूटी मिली। सामान्य जीवन शैली में पली-बढ़ी होने की वजह से उन्हें थोड़ा संकोच रहता था कि "ज्ञानियों को तो कितने भाव से अच्छी तरह से खाना बनाकर खिलाया जाता है और मुझे ठीक से खाना बनाना नहीं आता, तो मेरा बनाया हुआ खाना नीरू माँ को अच्छा लगेगा या नहीं।"

इसलिए उन्होंने नीरू माँ से कहा, "मुझे खाना बनाना नहीं आता।"

नीरू माँ ने कहा, "कोई हर्ज नहीं, तुम सब तैयारी करके रखना और मैं आकर छौंक लगा दूँगी।"

फिर वह बहन भाजी काटकर, मसालों के डिब्बे, तेल, छौंक का बर्तन वगैरह तैयार करके नीरू माँ को बुला लाती।

नीरू माँ आकर कहते, "तुम यहाँ खड़ी रहो और मैं जो बताऊँ वे चीज़ें मेरे हाथ में देती जाना।"

नीरू माँ एक के बाद एक चीज़ माँगकर डालते जाते थे और साथ ही साथ उसे सिखाते भी जाते कि पहले यह डालते हैं फिर यह डालते हैं। इस तरह करते हैं.... ऐसे खुद करके दिखाते और सिखाते भी थे।

उस दौरान एक भाई को काम से सुबह जल्दी बाहर जाना था। इसलिए नीरू माँ ने उन बहन को उस भाई के लिए टिफिन बनाने को कहा। दूसरे दिन सुबह बहन परांठे बेल रही थीं, लेकिन बनाना नहीं आ रहा था, बेलते-बेलते बिगड़ ही जाते थे। नीरू माँ नीचे आईं। उन्होंने देखा और कहा, "मैं बेलती हूँ और तुम सेको।"

नीरू माँ बेलते हुए उन्हें सीखा भी रहे थे कि इस तरह बेलते हैं। साथ ही टिफिन भरना भी सिखा रहे थे कि भाई का टिफिन हैं जो शाम तक एक ही बार खाते हैं इसलिए ठीक से भरना चाहिए, ताकि उन्हें तकलीफ न हो। हम अपने घर के लोगों को, भाईओं को जैसे देते हैं वैसे ही समझना। सब को क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं, उसका भी ध्यान रखना चाहिए।

ज्ञानी, अपने साथ रहनेवाले सभी को सिर्फ ज्ञान से ही नही, बल्कि व्यवहार से भी हर प्रकार से गढ़ते हैं, ताकि वे कहीं पर भी कच्चे न रह जाएँ।

पझल के जवाब

१.

5	3	4	6	7	8	9	1	2
6	7	2	1	9	5	3	4	8
1	9	8	3	4	2	5	6	7
8	5	9	7	6	1	4	2	3
4	2	6	8	5	3	7	9	1
7	1	3	9	2	4	8	5	6
9	6	1	5	3	7	2	8	4
2	8	7	4	1	9	6	3	5
3	4	5	2	8	6	1	7	9

२.

BIG FUN

३.

४.

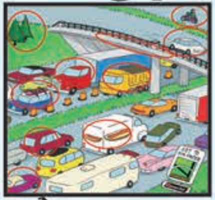

५.

T	R	R	L	V	F	O	U	R	V
E	B	O	M	S	E	V	E	N	R
N	S	P	N	Q	A	H	X	T	C
B	Z	L	I	O	N	E	K	B	B
T	H	R	E	E	E	I	G	H	T
V	O	T	W	O	V	Z	R	N	Q
F	E	H	L	H	S	I	X	F	X
T	E	N	I	N	E	G	D	O	I
D	P	N	A	C	E	R	T	B	B
X	I	Q	F	I	V	E	I	S	I

अपने आपको परखकर देखो के जवाब

१) दिपा २) सौरिन ३) श्लोक ४) आलाप भाई

समझ - एक बार अगर किसी ने चोरी की तो हमेशा के लिए उसे चोर नहीं मानना चाहिए। एक बार अगर किसी ने हमें अच्छा नहीं लगे ऐसा किया हो तो दोबारा वह ऐसा ही करेगा ऐसा नहीं मान लेना चाहिए। पहले का जजमेन्ट छोड़ देना चाहिए क्योंकि संयोगानुसार लोगों में बदलाव आता ही रहता है। प्रेजुडिस खुद को ही नुकसानदेह है और उससे छूटने के लिए दिल से प्रतिक्रमण करना चाहिए।

सीमंधर सिटी में मानाया गया पूज्य श्री के ६२ वाँ जन्मदिन पर उत्सव

Akram Express

June 2015
Year : 3, Issue : 3
Conti. Issue No.: 27

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

कई गाँवमें आयोजित किए गए समर केम्प की एक झलक

सुरेन्द्रनगर

भावनगर

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.